



श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र - श्रुत आराधना दैनिक गाथा विवेचन

अध्याय ०१ - गाथा ४८

स देव-गंधर्व-मणुस्सपूइए, चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।

सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिद्धिए ॥ ४८ ॥

ति बेमि ।

✚ अर्थबोध -

देव , गंधर्व और मनुष्य के द्वारा पूजीत विनीत शिष्य मल , पंक , गंदगी से युक्त इस देह को छोड़ कर , कर्म से मल निकल जानेपर शाश्वत सिद्धत्व को प्राप्त होता है या अल्प रजवाला महारीद्धिक देव बनता है।

✚ भावश्रुत -

पहले अध्याय विनय की यह आखरी गाथा है।

इस अध्याय की 48 गाथाओं में से 44 गाथाओं में विनयकी समग्र परिभाषा दी गई है जिसमें चलना, बोलना, खाना-पीना, सोना , उठना , बैठना इन सभी जीवन क्रियाओं में छुपे विनय के आयाम से पाप मुक्त जीवन के सामान्य सूत्र प्रारूपित है। वही सूत्र जीवन शैली के रूप में इन गाथाओं में गुंफित है।

उर्वरित, आखरी चार गाथाओं में विनीत जीवन की शिखर उपलब्धि की प्ररूपणा की गई है। इस आखरी गाथा में विनीत के जीवन उपरांत गति की मीमांसा की गई है।



Scan QR to follow
on social media



❖ स देव-गन्धर्व-मनुष्यपूइए

विनीत शिष्य देव , गंधर्व और मनुष्य के लिए पूजनीय बनता है । देव , दिव्य शक्तियाँ उस पर अभिषेक करती है। गंधर्व ,कवी,गायक इसके गीत गाते हैं । मनुष्य जगत उसकी तरफ एक श्रद्धेय स्वरूप, एक भगवान के रूप में देखते हैं। बाहर की उपलब्धियों के साथ ही उसे आभ्यंतर निजी उपलब्धियां भी होती है।

❖ चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं

मल, पंक , गंदगी से युक्त इस देह को छोड़ कर के ; कर्म मल , कर्म के पंकज को छोड़ करके

❖ सिध्दे वा हवइ सासए

वो शाश्वत सिद्धत्व को प्राप्त होता है । अशाश्वत सिद्धि या तात्कालिक सफलता नहीं कहा है । कर्मण शरीर का यदि मल निकल गया तो स्थायी सफलता याने सिद्धत्व प्राप्त होता है। परंतु आयुष्य या समय के नियम के कारण से संभावना है वह सिद्ध नहीं भी हो सकता है।

❖ देवे वा अप्परए महिद्धीए

सिद्ध नहीं बन पाए तो वो अल्प रजवाला , अल्प मल-पंक वाला और महान ऋद्धिवाला देव बनेगा। जितना रज कम होगा उतनी रिद्धि ज्यादा होगी। जितना रज ज्यादा होगा , उतनी रिद्धि कम होगी ।

विनीत शिष्य में रज, राग -द्वेष, क्लेश ,दूर्भावनाएं , नकारात्मक चिंतन न्यूनतम याने नहीं के समान होती है । इसलिए वह महारीद्धिक देव बनता है।

पहला अध्याय 'विनय' इस गाथा के साथ पूर्ण होता है।

🌸 जीवन श्रुत-

- ✓ विनय शील व्यक्ति उत्कृष्ट सम्मान के द्वारा सम्मानित किया जाता है, जहां देवता भी स्वर्ग में उसकी पूजा की चाह रखते हैं तथा प्रचुर मात्रा में उस पर आशीर्वाद की बरसात करते हैं ।कवि द्वारा उसकी प्रशंसा में मंगल गीत गाए जाते हैं और मनुष्यगण भी उस व्यक्तित्व को अपने श्रद्धेय तथा पूज्यनीय के रूप में स्वीकार करते हैं।
- ✓ विनय के द्वारा हमारी अंतरात्मा तथा आंतरिक शरीर की शुद्धि होती है तथा हमारे कर्मों का क्षयोपशम होता है , पाप कर्मों का हमसे दूर होना।
- ✓ जीवन में अगर आप सफल होना चाहते हैं तो विनय को अपने जीवन का अंग बनाना ही पड़ेगा, विनय सफलता पाने की सीढ़ी है।
- ✓ सफलता भले तुरंत ना मिले ,परंतु विनीत व्यक्ति का सफल होना निश्चित है आज नहीं तो कल।





बाल

- ✓ विनय गुणसे संपन्न बालक अपने सद्-व्यवहार तथा सद्स्वभाव के कारण सब जगह प्यार हासिल करने में सफल होता है, फिर वह चाहे स्कूल हो या दोस्त या फिर परिवार हो या कोई भी स्थान । जो लोग आपको जानते हैं ,उनके द्वारा सर्वत्र आपकी प्रशंसा होगी।
- ✓ विनय गुण आपको अंदर से शुद्ध बनाएगा तथा आप स्वयं को भीतर से शांत और स्थिर महसूस करेंगे।
- ✓ आप सफल होंगे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अगर आप अपने लक्ष्य को हासिल ना भी कर पाए तो ,थोड़ा इंतजार कीजिए, आपके पास वह गुण है ,जिसके कारण सफलता आपके कदम चूमेगी।



परिवार

- ✓ विनय गुणों से संपन्न व्यक्ति अपने सद्-व्यवहार तथा सद्स्वभाव के कारण वह अपने परिवार का सम्मानीय सदस्य होता है तथा परिवार के सभी सदस्यों तथा रिश्तेदारों को वह बहुत प्यारा होता है।
- ✓ परिवार के सदस्य आपके सद्गुण की प्रशंसा तथा सराहना करने में स्वयं आनंद की अनुभूति महसूस करेंगे।
- ✓ विनय के द्वारा आपकी अंतरात्मा शुद्ध होती चली जाएगी और आप भीतर से शांत तथा स्वयं को स्थिर महसूस करेंगे।
- ✓ आप सफल होंगे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे अगर आप सफल नहीं हो पाए ,तो आपका इंतजार ज्यादा लंबा नहीं होगा। सफलता आप का रास्ता ढूंढते हुए ,आपके पास चली आएगी।



व्यवसाय

- ✓ विनय गुणसे संपन्न व्यक्ति अपने सद्-व्यवहार तथा सद्स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों, ग्राहकों, सहयोगियों, कर्मचारियों का विश्वासपात्र सम्मानीय तथा प्रिय व्यक्तित्व होता है। लोगों को उनकी प्रशंसा तथा सराहना करने में आनंद की अनुभूति होती है। वह आपकी तथा आपके काम की प्रशंसा करने में भी गर्व महसूस करते हैं तथा यह आपके नाम तथा प्रसिद्धि का कारण बनता है , व्यापार, व्यवसाय में यश तथा समृद्धि लाता है।



- ✓ विनय आपकी अंतर चेतना को शुद्ध बनाएगा ,जिस कारण आप स्वयं को शांत तथा स्थिर महसूस करेंगे ,जो आपको जीवन की तनावपूर्ण स्थितियों के प्रबंधन करते समय भी आंतरिक रूप से आप को विचलित नहीं होने देंगा।
- ✓ विनयगुण से संपन्न होने के कारण अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है तथा कठिन या असंभव दिखने वाले लक्ष्य भी प्राप्त करने में आप सक्षम बनते हैं।

